B. A. Part - II - Psychology (Subsidiary)
Abnormal Psy.
Teacher - A. K. Sinha

Topic - अचेतन मस्तिष्क का स्वरूप।

अचेतन मस्तिष्क, Freud के Topographical Aspects of mind का सबसे बड़ा भाग है। यह चेतन तथा अर्धचेतन के योग से तीन गुणा बड़ा होता है। यहाँ पर अचेतन मस्तिष्क के कुछ विशेषताओं का उल्लेख करना अपेक्षित प्रतीत होता है जो निम्नांकित है:—

1. अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग होता है।:— Freud के अनुसार अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग है, यह सम्पूर्ण मस्तिष्क का 7/8 भाग अचेतन मन ही है जबकि 1/8 ही चेतन भाग है।

2. चेतन का स्वरूप गत्यात्मक होता है:— चूँकि अचेतन में अतृप्त दमित इच्छाएँ रहती है इसलिए ये स्थिर नहीं रहती है और कभी न किसी रूप में बाहर निकलने के प्रयास में रहती है। इसी प्रकार के क्रम में ये दमित इच्छाएं छद्म रूप में बाहर आने में सफल हो जाती है जैसे स्वप्न तथा दैनिक जीवन की भूलों के माध्यम से।

3. अचेतन शैशव स्वरूप का होता है।:— अचेतन का स्वरूप बच्चे के स्वभाव के जैसा होता है। जिस प्रकार, बच्चा अपनी इच्छाओं की पूर्ति शीघ्र चाहता है उसी प्रकार अचेतन मन की इच्छाएं शीघ्र अपनी पूर्ति चाहता है। जबतक इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है तब तक तनाव की स्थिति बनी रहती है। अत: इसका स्वरूप शैशव के समान होता है।

4. अचेतन यौन स्वरूप का होता है।:— Freud के अनुसार अचेतन मन यौन स्वरूप का होता है। क्योंकि अचेतन में काम (sex) सम्बन्धि ~~इच्छाएं~~ इच्छाएं दमित रहती है। साधारणत: यौन का अर्थ दो विपरीत लिंग के व्यक्तियों के पारस्परिक शारीरिक सम्बन्ध से लिया जाता है। परन्तु Freud ने यौन का अर्थ प्रेम प्रवृति की शक्ति से लिया है जिसकी अभिव्यक्ति का एक तरीका संभोग भी है। इस दृष्टिकोण से माता-पुत्र का स्नेह, दो मित्रों की पारस्परिक घनिष्ठता तथा भाई-बहन का स्नेह इत्यादि रूप कामुकता के ही परिणाम है। भूख, प्यास की तरह ही यह जन्मजात होती है। लेकिन सामाजिक तथा नैतिक आधारों पर

P.T.O →

बच्चों की भाँति इच्छाओं इच्छाओं पर आधारित होती रहती हैं जिसके परिणाम स्वरूप वो इच्छाएँ अतृप्त इच्छाएँ अचेतन मन में एकत्र रहती हैं। अतः स्पष्ट है कि अचेतन मन की सभी दमित इच्छाएँ कामुक स्वरूप की होती है।

5 – अचेतन सुख-दुःख के नियम से निर्देशित होता है – चूँकि चेतन का सम्बन्ध बाह्य वातावरण से रहता है। यह वास्तविकता के नियम के अनुसार कार्य करता है लेकिन अचेतन मन का सम्बन्ध बाह्य वातावरण से बिल्कुल नहीं रहता है अतः यह सुख-दुःख के नियम से निर्देशित होता है। कहने का तात्पर्य है कि यह सदा सुख की प्राप्ति हेतु अपनी इच्छाओं की संतुष्टि के लिए प्रयत्नशील रहता है। यह उसके परिणाम या आधार के बारे में कभी विचार नहीं करता। इसका एक ही लक्ष्य होता है उस कार्य को करना जिससे सुख की प्राप्ति होती है।

6 – अचेतन में अहं (ईद) की प्रवृत्तियाँ रहती हैं। — अचेतन में ईद की प्रवृत्तियाँ रहती हैं इस प्रकार ईद की प्रत्येक विशेषता अचेतन मन की विशेषता होती है। यथा – स्वार्थी होना, नैतिकता से अलग होना, अतार्किक होना, विरोधों को न पहचानना तथा समय का विचार न करना इत्यादि।

7. अचेतन मन में बिना संघर्ष के परस्पर विरोधी इच्छाएँ और विचार रहते हैं:— चेतन मन में तो ~~परस्पर विरोधी~~ परस्पर विरोधी विचारों का रहना संभव नहीं है जबकि अचेतन मन में परस्पर विरोधी इच्छाएँ या विचार एक ही साथ रहते हैं। जैसे एक ही व्यक्ति के प्रेम तथा घृणा के के भाव एक ही साथ अचेतन मन में रह सकते हैं। अचेतन के विचारों के बीच निरन्तरता पाई जाती है। परिणाम स्वरूप परस्पर विरोधी विचारों के बीच कोई अन्तर नहीं रहता। परिणाम स्वरूप अचेतन में प्रसन्नता एवं निराशा, प्रेम और घृणा, आकर्षण एवं विकर्षण, सभी तरह के विचार एक साथ रहते हैं और संगठित रूप में होकर चेतन में आने के लिए प्रयास करते रहते हैं।

8. यह व्यक्ति के नियंत्रण से परे होता है। — अचेतन मन की इच्छाओं पर व्यक्ति का नियंत्रण के नहीं होता है। क्योंकि अचेतन की इच्छाएँ

शेष पृष्ठ 3 – पे।

व्यक्ति के चेतन की परिधि से बाहर होती है। परिणाम स्वरूप वह इनसे अनभिज्ञ रहता है। इसलिए इन पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। अचेतन मन में कल्पना और वास्तविकता के बीच कोई अन्तर नहीं होता है। अचेतन की दृष्टि में हवाई किले बनाना उतना ही वास्तविक है जितना कि धरती पर मकान बनाना। इसलिए व्यक्ति अचेतन के प्रभावों पर कोई नियंत्रण नहीं रख पाता है। यही कारण है कि व्यक्ति के नियंत्रण के अभाव में अचेतन की इच्छाएँ रूप बदलकर स्वप्न तथा दैनिक जीवन की भूलों के माध्यम से प्रकट होती रहती हैं।

9. अचेतन अपनी इच्छाओं की पूर्ति छद्म रूप में करता है। — अचेतन में दमित अतृप्त इच्छाएँ चेतन अभिव्यक्ति के लिए बहुत अधिक-सक्रिय रहती हैं। लेकिन इन पर चेतन मन का कड़ा प्रतिबन्ध रहता है। इसलिए अचेतन की घृणित, असामाजिक और अनैतिक विचारों की अभिव्यक्ति-वास्तविक रूप में न होकर छद्म वेश में होती है; स्वप्न इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।